'श्री राज श्यामा जी सदा सहाय'

आखिर श्री प्राणनाथ जी मन्दिर क्यूँ

आत्म सम्बन्धी प्यारे सुन्दरसाथ जी, हम सब सुन्दरसाथ के सामने ही सामने बल्कि यूँ कहें कि देखते ही देखते श्री प्राणनाथ जी पूर्ण पारब्रह्म को जाहिर करने हेतु स्वयं श्री जी के हुकम से स्थान-स्थान पर श्री प्राणनाथ जी मन्दिरों की स्थापना हो रही है। यह हमारे समाज के लिये २०वीं शताब्दी की महान उपलब्धि है कि गुजरात के बाद अमृतसर, नैनीताल, लखनऊ, अबोहर, जालन्धर, फाजिल्का, दिल्ली, कानपुर व अब जयपुर में भी श्री प्राणनाथ जी मन्दिर का शुभारम्भ हुआ।

हममें से कई सुन्दरसाथ के मन में अवश्य ही विचार आता होगा आखिर जिन शहरों में पूर्व में ही हमारे कई मन्दिर श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर के नाम से हैं एवं वहां पर भी श्री जी के हुकम अनुसार श्री मुखवाणी की ही पधरावनी की गई है एवं अष्ट प्रहरों की पूजा सेवा अर्चना होती है तो आखिर श्री प्राणनाथ जी मन्दिर की आवश्यकता क्यूं पड़ी?

आज तक और अभी तक हम सभी सुन्दरसाथ श्री कृष्ण जी को ही जाहिर करने में लगे रहे जबकि श्री कृष्ण जी तो पाँच हजार वर्ष पूर्व ही इस संसार में जाहिर हो चुके है एवं श्री प्राणनाथ जी जो कि स्वयं बुध निष्कलंक अवतार, पूर्ण पारब्रह्म, आखिरूलजमा इमाम मेंहदी के रूप में केवल ३५० वर्ष पूर्व ही इस संसार में प्रगट हुये एवं उन्हीं के चरण कमल के प्रताप से इस संसार को ही नहीं वरन चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड एवं इनके मालिक त्रैगुण को भी मुक्ति मिलनी है।

विजयाभिनन्द-बुध जी, और नेह कलंक अवतार।
कायम करसी दुनिया, त्रिगुन को पोहोंचावे पार।।

खु० १३/५६

खैर श्री जी की ऐसी ही इच्छा थी एवं ऐसा ही हुकम था। यदि श्री धनी देवचन्द्र जी की पाती का ध्यान से अध्ययन करें तो स्पष्टतः लिखा है कि वाणी १५० वर्ष तक ढाँपी रहेगी और जब तक वाणी ढाँपी रहेगी तो श्री प्राणनाथ जी कैसे जाहिर होंगे। जब तक हम वाणी की केवल पूजा अर्चना ही करते रहेंगे एवं मंथन नहीं करेंगे, श्री जी द्वारा कहे एक-एक वचन को हृदय में नहीं उतारेंगे तो कैसे जान पायेंगे कि श्री प्राणनाथ जी कौन हैं। आइये! श्री मुख वाणी द्वारा ही पहचान करें कि हम रूहों के श्री प्राणनाथ जी कौन हैं।

इस नश्वर जगत में तीसरी बार हमसे पहले ही श्री राज जी पधारे। परन्तु अपने आनन्द अंग श्री श्यामा जी के सरूप में और श्री जी ने स्पष्ट कहा कि हे श्यामा महारानी अपनी रूहों को जाकर लेआओं तुम्हारी रूहें तो माया में मग्न हो गईं।

सुन्दरबाई इन फेरे, आये हैं इन कारन जी।
भेजे धनिये आवेस देय के, अब न्यारे न होये एक खिन जी।।

प्र० २/२

आगे श्री इन्द्रावती जी क्या फुरमाती हैं हे मेरी रूहों श्री श्यामा महारानी हम रूहों की प्राणनाथ है

Nijanand App

साक्षात धाम धनी इनके अन्दर विराजे हैं। ये वाणी भी इन्हीं की कृपा से सब साथ के लिये आयी हैं।

कहियत सदा प्रबोध वचन, पर कबूँ न बानी ए उतपन।
तिन कारन तुम सुनियो साथ, आपन में आए प्राणनाथ।।

प्र० ४/६

और साथ ही साथ श्री महामति जी रूहों को प्रबोध रही है।

ता कारन तुम सुनियो साथ, प्रगट लीला करी प्राणनाथ।
कोई मन में न धरियो रोष, जिन कोई देओ महामति को दोष

प्र० ४/१३

हे रूहों, कोई भी श्री इन्द्रावती को दोषारोपण मत करना कि श्री प्राणनाथ जी आये और किसी को बताया नहीं। साक्षात धामधनी तुम्हारी सुभान श्री श्यामा महारानी के साथ आ चुके हैं।

सो तो अब जाहिर भये, सब बिध वतन सहित

श्री प्रगटवाणी

हे सुन्दरसाथ जी, श्री राजश्यामा जी जिनको प्यार से हम रूहें अपना प्राणनाथ कहते हैं वो इस संसार में अब दूसरे तन में पूर्णतः जाहिर हो रहे हैं

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुददार।
सोई इमाम मेंहेंदी, याकी बुजुरकी बेसुमार।।

किरंतन प्र० १०८/७

एवं वो अखण्ड आनन्द जो कि परमधाम में था साक्षात इस जगत में आ चुका है और वो ही हम सब रूहों का अक्षरातीत भरतार ही हमारे प्राणनाथ है।

आयो आनन्द अखण्ड घर को, श्री अक्षरातीत भरतार

श्री प्रगटवाणी

यही आनन्द अंग श्री श्यामा महारानी जी है जो कि श्री जी के आवेश से मुक्त है यही हमारी प्राणनाथ है जो कि दूसरे तन श्री इन्द्रावती की आत्म पर श्री प्राणनाथ के रूप में जाहिर हुई। अब इस ब्रह्माण्ड में हम सब रूहों ने मिलकर श्री जी के हुकम से ही श्री प्राणनाथ जी को जाहिर करना है

इसी प्रयास में प्रथम कड़ी थी श्री महाराज छत्रसाल जी जिन्होंने अपने धामधनी को पहचाना एवं इस संसार में उन्हें जाहिर किया।

पूर्ण ब्रह्म, ब्रह्म से न्यारे, आनन्द अखंड अपार।
शिव सनकादिक आदि के इंछित, शेष न पावे पार।।

एवं स्वयं धामधनी से कहा कि हे प्रीतम आप तो परमधाम में जुगल स्वरूप हो, इसलिये जाहिरी रूप से जुगल जोड़ी श्री प्राणनाथ जी एवं श्री तेज कुवरि जी को सिंहासन पर पधराया एवं पूर्ण ब्रह्म के साथ आरती उतारी और पूर्ण भारत वर्ष मे बता दिया कि पूर्ण पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ही हैं।

इसी जंजीर में एक कड़ी यह और जुड़ी है कि अब श्री प्राणनाथ जी जो सबके साहेब उन्हें जाहिर

Nijanand App

करने का बीड़ा मोमिनों ने उठाना है एवं जगह जगह श्री प्राणनाथ जी के मन्दिरों की स्थापना द्वारा इस कार्य को आगे बढ़ाया जा रहा है।

थोड़ा सा यदि श्री कृष्ण और श्री प्राणनाथ में अन्तर समझ लें तो तस्वीर स्पष्ट हो जायेगी।

श्री कृष्ण जी के तन मे आत्म अक्षर व जोश धनी धाम था (श्री प्रगटवाणी अनुसार) एवं श्री श्यामा जी श्री राधारानी जी के तन में विराजमान थीं (श्री राम वाणी द्वारा) परन्तु जुगल जोड़ी एक ही तन में एक ही आत्म पर विराजमान नहीं थी। इसी सन्दर्भ में श्री जी ने कहा कि

"मांगा किया राधाबाई को, पर ब्याहे नहीं प्राणनाथ"

और साथ ही साथ श्री जी ने अक्षर को ब्रह्म बताते हुए अपना सतअंग सत्ता का स्वरूप बताते हुये भी कहा है कि अक्षर ब्रह्म रंगमोहोल में होने वाली इश्क की लीलाओं से सदा-सदा से अनभिज्ञ था।

अक्षरातीत के मोहोल में, इश्क प्रेम बरसत।
सो सुध अक्षर को नहीं, किन विध केल करत।।

कि० ७४/२६

अतएव अक्षर जिसकी सदैव यह इच्छा थी कि मैं भी रंग मोहोल में हो रही इश्कमयी लीला को देखूं, क्यूंकि रंगमोहोल के अन्दर तो उसका प्रवेश वर्जित है। वाहेदत (इश्कमयी) के प्रांगण में सत्ता का क्या काम? अतएव श्री जी ने पहले अपने दिल में लिया फिर अक्षर के दिल में उपजा।

तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूरजलाल।
तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखो इस्क नूर जमाल।।

खि० ६/

इस उपरोक्त कथन से ये निष्कर्ष स्पष्ट है कि अक्षर श्री जी का सतअंग होते हुए भी श्री जी से अलग है। एक और उदाहरण प्रस्तुत है जब रास में श्री बांके बिहारी के तन में बैठी अक्षर की आत्म रूहों के साथ रास में इतनी मग्न हो गई कि रूहें व अक्षर दोनो ही अपनी मूल स्थिति को भूल गईं तब श्री राज जी मूल स्वरूप, रूहों के प्राणनाथ, हमारे खसम धामधनी ने अक्षर की आत्म से अपने जोश को खेंच लिया।

फेर मूल स्वरूप देखा तित, ऐ दोऊ मगन हुऐ खेलत।
जब जोश लिया खेंच कर, तब चित्त चौंक भई अक्षर।।

श्री प्रगटवाणी

अब ये बिल्कुल स्पष्ट हो जाना चाहिये कि अक्षर अलग है व श्री राज जी मूल स्वरूप अलग है। यदि हम अभी भी श्री कुलजम स्वरूप की वाणी को पधरावनी श्री कृष्ण (आत्म अक्षर) को अपना धामधनी मानकर ध्याते रहेंगे तो हम निश्चित रूप से अक्षर को ही अपना पति मान रहे है जो कि श्री जी को भी मंजूर नहीं जैसा आपने अभी अखण्ड योग माया के ब्रह्माण्ड में देखा। अक्षर न तो कालमाया के ही ब्रह्माण्ड में हमारा पति है और न ही योगमाया के ब्रह्माण्ड में एवं न ही परमधाम में। हम रूहों के प्राणनाथ तो मूलस्वरूप है जो कि जुगल स्वरूप हैं और इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में श्री इन्द्रावती की आत्म पर आकर श्री श्यामा महारानी एवं श्री जी पधारे यही हमारे श्री प्राणनाथ है।

Nijanand App

हम रूहें अंग किसके है। तुरन्त ही जुबान पर एक ही बात आती है हम तो श्यामा जी के अंग हैं जब हम अंग श्यामा जी के है तो हमारा अस्तित्व भी श्री श्यामा महारानी से है। वो ही हमें इस संसार से हमारी सुरता को मोडकर परमधाम श्री राज जी महाराज के समुख करेगी। जब तक हम श्री श्यामा महारानी जो कि श्री राज जी के आवेश से युक्त हैं (अर्थात इन्द्रावती की आतम पर विराजमान जुगलस्वरूप श्री प्राणनाथ) को नही पकड़ते है हमारी आतम कभी भी मूलतन परआतम में खड़ी नही हो सकती। इसलिये जहाँ पर हमारी सुभान श्री श्यामा जी महारानी श्री जी के साथ विराजमान है वो ही हमारे पति का घर है। हमारे श्री प्राणनाथ का मन्दिर है।

बुलाय ल्याओं सैयन को, अपने वतन निजधाम।
इनको इत जगाय के, पूरा मनोरथ काम।।

श्री बीतक साहब ७/४

ल्याओ बुलाय तुम रूह अल्ला, जो रूहे मेरी आसिक
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।।

खि० १३/१

अब यह पूर्णतः स्पष्ट है कि यदि अक्षर की आत्म को (श्री कृष्ण) हम ध्याते हैं तो वो परम धाम तो ले जायेगे पर जमुना जी के इसी पार अक्षर धाम भी जिसे कहते है यही रह जायेगें क्योकि अक्षर को भी रंग मोहोल में जाने की अनुमति नहीं। हम बैठे रंग मोहाल में खिलवत खाने में है। यदि हम श्यामा महारानी (श्री प्राणनाथ जो कि सिर्फ इन्द्रावती महारानी की आत्म पर विराजे) का दामन पकड़ते है तो सीधा खिलवत खाने में जहाँ श्री राज जी श्यामा जी विराजे है। उनके चरणों मे हमारी आत्म उठ खड़ी होगी।

अतएव जिस स्थान पर श्री जी की जुगल जोड़ी श्री राज श्याम जी की पधरावनी है एवं इन्हे ही अपना प्राणनाथ जान कर, पहचान कर जहाँ पूजा अर्चना अष्ठ प्रहर की होती है वही है हमारे श्री प्राणनाथ जी मन्दिर।

और हमें अपने प्राणप्रीतम प्राणनाथ को रिझाना है, उन्हीं से अर्जी करनी है और उन्हीं से लाड़ प्यार करना है। यही सच्ची पतिव्रता नारी का कर्तव्य है धर्म है।

अन्ततः हमें श्री प्राणनाथ जी मन्दिरों की शोभा पूरे भारतवर्ष में ही नही वरन पूर्ण संसार में बढ़ानी है जो कि श्री प्राणनाथ जी की मेहेर से ही संभव हो रहा है।

प्रणाम जी
सुनील निजानन्दी
कानपुर

Nijanand App